प्रैस विज्ञप्ति

क्रोनिक केयर फाउंडेशन ने मधुमेह, हृदय रोग, गुर्दा रोग पर विशेष रिसर्च के नतीजे प्रस्तुत किए

नई दिल्ली, 16 जनवरी 2009: क्रोनिक केयर फाउंडेशन ने एक जानीमानी मार्केट रिसर्च संस्था के सहयोग से भारत के चार प्रदेशों में रिसर्च की जिसका शीर्षक है: ''भारत में स्थायी असंक्रामक रोग–उपचार की कीमत, क्वालिटी व कमियों का अध्ययन''। यह अध्ययन सरकारी व निजी दोनों क्षेत्रों में किया गया।

क्रोनिक केयर फाउंडेशन के मैडिकल एडवाइज़री बोर्ड के चेयरमैन डॉ. अनूप मिश्रा के अनुसार, ''भारत में यह इस किस्म की पहली स्टडी है। इसके तहत ये पता लगाया गया की क्वालिटी हैल्थकेयर में किस तरह की कमियां हैं तथा कहाँ पर सुधार की आवश्यकता है। मधुमेह, हृदय रोग, गुर्दा रोग के मामलों में जो परिणाम सामने आए हैं उनसे चिकित्सकों, हॉस्पिटल मैनेजमेंट, सरकार व निजी हैल्थकेयर संस्थानों, नीति निर्माताओं, इंशयोरेंस कंपनियों यहाँ तक की मरीज़ों को भी लाभ होगा। अगर इन कमियों को हम दूर कर लें तो हमारे देश में भी विकसित देशों जितनी बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं देखने को मिलेंगी।''

यह अध्ययन दो चरणों में संपन्न किया गया - पहला अन्वेशी चरण और दूसरा सर्वेक्षण चरण। इसके टारगेट ग्रुप मैडिकल सर्विस प्रोवइडर तथा हिताधिकारी - प्रभावित व अप्रभावित दोनों थे। देश के चार प्रदेशों में शहरी व ग्रामीण दोनों इलाके शामिल थे। 360 प्राथमिक सैंपलिंग यूनिटों (पीएसयू) में 1800 हिताधिकारी शामिल रहे।

इस रिसर्च प्रोजेक्ट में सामने आईं मुख्य बातें थीं घनी ग्रामीण आबादी वाले 86 प्रतिशत ज़िलों में इन बीमारियों के लिए सबसे सामान्य डायग्नोस्टिक टैस्ट सेंटर भी नहीं हैं। केवल 34 प्रतिशत ग्रामीणों के लिए डायग्नोस्टिक सेंटर क़रीब हैं। लगभग आधे पीएसयू में इन तीन स्थायी रोगों के लिए कोई उपचार सुविधा नहीं है। अधिकतर लोगों का यही कहना था की उनके क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा न होने की वजह से उन्हें दूसरी जगहों पर जाना पड़ता है। उच्च ग्रामीण जनसंख्या वाले 80.9 प्रतिशत पीएसयू में इन तीन रोगों के लिए कोई चिकित्सा सुविधा नहीं है।

अन्य खोजों से पता चलता है की केवल 45 प्रतिशत लोग दवाओं तक आसानी से पहुँच पाते हैं। स्ट्रोक व क्रोनिक किडनी रोगियों के लिए यह बहुत कठिन है। सरकारी सुविधाएं न होने की वजह से लोग बड़े पैमाने पर निजी सुविधाओं पर निर्भर हैं। इस स्टडी में क्वालिटी जांचने के लिए भारतीय जनस्वास्थ्य सेवा (आईपीएचएस) का मापदंड अपनाया गया। नतीजों से मालूम चला की बहुत कम स्वास्थ्य सेवाएं इस पैमाने की कसौटी पर खरी उतरती हैं।

60 प्रतिशत स्वास्थ्य केन्द्रों के पास मरीज़ को दाखिल करने के बारे में दिशानिर्देश हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक उपकरण न होने की वजह से रोगाणुनाशन के लिए उबालना सबसे आम तरीका है। भारतीय जनस्वास्थ्य सेवा के दिशानिर्देशों के मुताबिक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में सुविधाएं नहीं हैं। ब्लड बैंक की सुविधा 50 प्रतिशत से भी कम स्वास्थ्य केन्द्रों में ही पाई गई। ईलाज के खर्चे के संबंध में मालूम चला की ग्रामीण क्षेत्रों में कुल व्यय का 45.8 प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष खर्चा है, जबकि शहरों में यह आंकड़ा 39.6 प्रतिशत है। हॉस्पिटल में भर्ती होने का खर्च कुल व्यय में सबसे ज़्यादा है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह खर्च 79.1 प्रतिशत तक पहुँचता है। क्योंकि वहाँ स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं हैं इसलिए लोगों को हॉस्पिटल में भर्ती होने तथा विशेष उपचार के लिए दूसरे क्षेत्रों में जाना पड़ता है।

यह भी पाया गया की साक्षरता की कमी की वजह से इन स्थायी रोगों के रोकथाम के पहलू के बारे में अज्ञानता फैली हुई है। ग्रामीण (24 प्रतिशत) व शहरी (76 प्रतिशत) क्षेत्रों में 754 अप्रभावित लोगों, जिनकी औसत उम्र 41.5 साल थी, से पूछने पर पता लगा की 31.8 प्रतिशत लोगों की किसी भी तरह की शिक्षा नहीं हुई थी और 60.3 प्रतिशत लोग 12वीं कक्षा तक ही स्कूल गए थे। 35 से 40 वर्श के ग्रामीणों में शिक्षा का स्तर और भी कम था तथा उनमें इन तीन स्थायी रोगों की जानकारी का नितांत अभाव था।

केवल 10 प्रतिशत स्वास्थ्य केन्द्रों में स्थायी रोगों के बारे में शिक्षा सामग्री उपलब्ध थी। जिन केन्द्रों में खानपान सलाह, मैडिकेशन तथा इलाज संबंधी अन्य सुविधाएं मौजूद पाई गईं वे सब शहरी क्षेत्रों के ही थे। क्रोनिक केयर फाउंडेशन ने पाया की ग्रामीण क्षेत्रों में इंशयोरेंस के बारे में जागरुकता बढ़ाने की ज़रुरत है। इस राह में मौजूद बाधाओं को पता कर के उन्हें हटाना होगा और इस कमी को पूरा करना होगा।

क्रोनिक केयर फाउंडेशन के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ के चेयरमैन श्री हरपाल सिंह ने इन खुलासों पर कहा, ''सीसीएफ द्वारा की गई यह स्टडी असंक्रामक स्थायी रोगों के विषय पर हमें काफी नई जानकारियां देती है। इन्हीं परिणामों के आधार पर सीसीएफ अपने सहयोगियों के साथ मिलकर योजना बना कर इस दिशा में काम कर सकती है। इस महाकार्य को संपन्न करने हेतु सरकार, नीतिनिर्माता, सेवा प्रदात्ता व समाज को एकजुट हो कर आगे आना होना।''

क्रोनिक केयर फाउंडेशन के बारे में
यह एक रजिस्टर्ड पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट है जिसकी स्थापना 2006 में हुई। इसका उद्देश्य है समाज पर असंक्रामक स्थायी रोगों के प्रभाव को कम करना। सीसीएफ भारत में एक कारगर स्वास्थ्य कल्याण प्रणाली के माध्यम से, क्रोनिक, कार्डियोवैस्कुलर रोगों, मधुमेह, गुर्दा रोगों के उपचार हेतु सुरक्षा व क्वालिटी को बेहतर बनाने के लिए समर्पित

है। इसके लिए सीसीएफ रोकथाम, हिमायत, शिक्षा तथा स्टेकहोल्डरों व समुदाय का सहारा लेगी।

स्थायी रोगों के बारे में–

- अनुमान है की 2020 तक भारत में 76,30,000 जानें स्थायी रोगों की वजह से चली जाएंगी। कार्डियोवैस्कुलर, रेस्पीरेट्री डिसीज़, कैंसर व डायबिटीज़ भारत में 53 प्रतिशत मौतों का कारण बनेंगे। यह आंकड़ा संक्रामक रोगों से होने वाली मौतों से अधिक है।
- दुनिया के 20 प्रतिशत हृदयरोगी भारत में हैं, दुनिया में 6 करोड़ दिल के मरीज़ हैं। 5 करोड़ 72 लाख डायबिटीज़ के रोगी भारत में हैं और ये हर साल बढ़ते हैं।
- अनुमान है की 50 प्रतिशत से कम अंतिम चरण के गुर्दा रोगी डॉक्टर के पास जाते हैं। 14–15 प्रतिशत ऐसे रोगी किसी न किसी दीर्घकालिक उपचार पर हैं। 70 प्रतिशत मरीज़ इलाज के पहले साल में ही थेरपी छोड़ देते हैं, मुख्य वजह होती है पैसों की कमी। ऐसे केवल 10 प्रतिशत से कम मरीज़ों को ही कारगर रेनल रिप्लेसमेंट थेरपी मिल पाती है।
- कई अध्ययनों के अनुसार भारत के महानगरों में हर 6 में से 1 किशोर ओवरवेट है। 80 प्रतिशत मोटे किशोर, व्यस्क होने पर भी मोटे ही रहते हैं। इन्हें हार्ट अटैक का दोगुना खतरा रहता है।
- दिल्ली के 5 विद्यार्थियों में से 2 को हाई कॉलेस्ट्रोल व मधुमेह है।
- यह गणना की जा रही है की हृदयरोग, आघात व मधुमेह की वजह से होने वाली मौतों के चलते 2015 तक चीन, भारत, रशिया औसतन 23 से 53 अरब अमेरिकी डॉलर हर साल गवांएगे।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

Contact Person: Rama Naidu, CEO.
Company Name: Chronic Care Foundation
Voice Phone Number: 011 46593991 / (9899388583)
FAX Number: 011 46026405
Email Address: rnaidu@chroniccareindia.org

Website URL: www.chroniccareindia.org